दिनांक 09.01.1975 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

निराकारी और आकारी अवस्था सहज बनाओ
यही स्मृति रखकर अपने साकारी रूप में आओ

अभ्यास करके ये अवस्थाएं एक समान बनाओ
इसी अंतिम स्टेज से पास विद ऑनर बन जाओ

समय परिवर्तन का रोज आता जा रहा नजदीक
देवी देवता की विशेषता को लाते जाओ समीप

विनाश की घड़ियों का ना करना कभी इन्तजार
शक्तिशाली संकल्पों के जगाओ खुद में संस्कार

अपनी प्रालब्ध बनाने में ना बनो कभी कमजोर
समर्थ संकल्पों का वातावरण बनाओ चारों ओर

खुद को समझना बापदादा के नयनों के सितारे
स्वयं के और बाप के बीच अन्तर मिटाओ सारे

एकरस होकर एक की लगन में मगन हो जाओ
प्रकुति और पाँच तत्वों के विघ्नों से मुक्ति पाओ

दिल में बाप को रखकर जीवन सेवा में लगाओ
दृष्टि वृत्ति स्मृति को सदा के लिए समर्थ बनाओ

सम्पूर्ण परिवर्तन की कमी अपने मन से मिटाओ
एक बाप की स्मृति से ज्वाला स्वरूप अपनाओ

देह से न्यारे होकर अपनी उपराम अवस्था पाओ
वापस घर जाने की धुन अपनी बुद्धि में लगाओ